IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

सुभाष चन्द्र पाल, शोधार्थी, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म0प्र0)

सारांश

मूल्य आधारित शिक्षा अपने समाज एवं राष्ट्र को किसी भी प्रकार से भ्रष्टाचार, हिंसा, द्वेष प्रताड़ना आदि बुराईयों को अपने अन्दर शरण नहीं देती है। सुसंस्कृति समाज की पहचान उसकी शिक्षा से होती है। मानवीय मूल्य उसकी आत्मा के मूल्यों का सम्बन्ध जीवन के द्रष्टिकोण से है। यदि जीवन को मूल्य कहाँ जाये तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। मूल्यों के विचार धारा से तात्पर्य है, आदर्श, सिद्धांत एवं नैतिकता है। मूल्यों का विकास समाज से होता है। समाज के सांस्कृतिक गुणों से नैतिक विकास होता है। मूल्यों के आदर्श से हमारी मनोवृत्ति के द्वारा व्यहार में परिवर्तन होता है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से आचरण की अनुभूति होती है। नैतिक शिक्षा के माध्यम मूल्य में अभिप्रेरणा का विकास होता है। आधुनिक समय सबसे ज्यादा नैतिक एवं मूल्य शिक्षा में गिरावट को देखा जाता है। जब हमारे मूल्य सत्यम् शिवम्, सुन्दरमं से अभिप्रेरित होने चाहिये। हमारे जीवन का मुख्य उद्देष्य 'जीयो और जीने दो' की भावना से ओत-पोत होना चाहिये। अतः शोध पत्र में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा की अवधारणा तथा वर्गीकरण एवं मूल्यों का नैतिक शिक्षा के सांर एवं जीवन में महत्व मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

बीज शब्दः-मूल्य, नैतिक शिक्षा, समाज, संस्कृति आदि।

प्रस्तावनाः-

किसी सुसंस्कृत समाज की आधारशीला उसकी शिक्षा प्रणाली को माना जाता है। यदि नैतिक शिक्षा एवं आदर्श उसके मूल्यों को स्प्रष्ट दृष्टिकोण और शिक्षा प्रदान करे तो समाज और राष्ट्र का भविष्य समुन्नत हो सकता है। मानव का सामाजीकरण समाज के रीति रिवाजों के अभाव में सम्पन्न नहीं हो सकता है। यहां तक हमारे समाज शास्त्रीयों ने स्पष्ट किया कि व्यक्ति समाज के बिना जीवित नहीं रह सकता है।

मैकाइवर एवं पेज ''समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है यह कथन स्पष्ट करता है। समाज में बंधन एवं रीति से युक्त है। जिसमें व्यक्ति नैतिकता का आदर्श अपना कर एक गरिमामय द्रष्टिकोण की अनुभूति करता है। मानव एक विधि पालक प्राणी होने साथ-साथ स्वाभीमान पूर्ण आदर्श मूल्यों को अपने अन्दर अन्त्रतनिहित करता है। मूल्य और नैतिक शिक्षा एक दूसरे के पूरक है। जिस प्रकार मूल्यों के अभाव में नैतिक शिक्षा बौना जैसी दृष्टिगत होती है। मूल्य की अवधारणा का तात्पर्य ही आदर्श नैतिक संस्कार ही होता है। समाज के अभाव व्यक्ति नैतिक एवं मूल्य को विकसित नहीं कर सकता है। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही निरन्तर मुल्य एवं नैतिक शिक्षा का विकास करता है। परन्तु समाज में हम कुछ मूल्यों को प्राथमिकता देते है। और कुछ को त्याग देते है। मानव व्यवहार केवल विचारों से ही नहीं परन्तु भावों के द्वारा होता है। स्थायी भावों के आधार पर ही मूल्यों का चयन होता है। मूल्य का महत्व उस स्थायी भाव के अन्दर छिपा होता है। मूल आभिवृत्तियां एवं आदर्श व नैतिक शिक्षा हमारे व्यवहार को निर्देशित करते है।

मूल्य का अर्थः-

मूल्य को अंग्रेजी में (Value) कहते है। लैटिन भाषा के Valere' शब्द से मानी जाती है जो किसी वस्तु कीमत या उपयोगिता को व्यक्त करती है। भारतीय धर्म ग्रन्थों में मूल्य के लिए 'शील' शब्द अनेक स्थानों पर प्रयुक्त होता है। इस प्रकार मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, कार्य, विचार व्यवसाय, आदर्श का धारण करने से पहले लाभ-हानि पर विचार करता फिर व उसे स्वीकार करता है। वुबेकर के अनुसार ''किसी के शिक्षा उद्देष्यों को व्यक्त करना वस्तुतः उसके शिक्षा-मूल्यों को व्यक्त करना है' '

1। ए0के0सी0 ओटावे के अनुसार’ ’ मूल्य वे विचार है जिनके लिए मनुष्य जीते है’ 2 मनुष्य मूल्य के माध्यम से अभिप्रेरित होता है। व्यवहार में परिमार्जन करने मूल्य एक साधन की भूमिका में रहता है। यदि मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति में निर्णय परक सहायक होते है। मूल्य के माध्यम से आत्मिक सहयोग दण करते है। यदि व्यक्ति, धैर्य एवं सहास तार्किक चिन्तन यह सब मूल्य के माध्यम से उत्प्रेरित होते है।

नैतिक शिक्षा:-

आज के समय में प्रश्न उठता है किनैतिक शिक्षा का स्वरूप क्या हो?यदि सामाजिक पहलू से देखे तो नैतिक शिक्षा की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। समाज में चरित्रार्थ को बढ़ावा देना जिससे नवीन पीढ़ी अपने चरित्र, कर्तव्यनिष्ठा, मानवीयता, राष्ट्रीयता, बन्धुतता सदाचार परोपकार अहिंसा, समाज सेवा जैसे गुण अति आवष्यक है। इस प्रकार के आदर्ष नैतिक शिक्षा के माध्यम से ही उत्पन्न हो सकते है। आज के समय में शैक्षिक संस्थानों को नैतिक शिक्षा के रूप में एक अनिवार्य विषय के गठन की आवश्यकता और उसका कार्यन्वयन धरातल पर किया जाना अति आवष्यक है। जो समाज को एक सार्थक दिशा देने का कार्य करेगा।

मूल्यों का वर्गीकरण:-

मूल्य व्यक्ति के जीवन के प्रेरक बिन्दु होते है। मूल्य के अभाव में व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता है। जो भी कार्य किया जाता है उसके पीछे कोई खास प्रयोजन होता है। जैसे- शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, मनौवैज्ञानिक या दार्षनिक, तार्किक अवधारणा अवष्य होती है। इस प्रकार की अवधारणा ही मूल्य के रूप में प्रार्दुभाव होता है। मुनष्य को परोक्ष या अपरोक्ष रूप में मूल्य प्रभावित करते है। मनुष्य के जीवन में मूल्य ही उसके संस्कार या संस्कृति कहलाते है। व्यक्ति के जीवन का प्रमुख उद्देष्य नैतिक मूल्य का निर्माण कर उसे सुरक्षित रखना है। यदि नैतिक मूल्यों को सुरक्षित नहीं रखा गया तो इसका अर्थ है। कि मनुष्य अपनी संस्कृति खो रहा है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में नैतिक मूल्य का विषेश स्थान होता है। मूल्य व्यक्ति को आनन्द की अनुभूति कराते है और व्यक्ति को सोचने समझने व कार्य करने एवं आगे उन्नति करने की

ऊर्जा देते है। व्यक्ति के मूल्य विषेश उसे जीवन के लक्ष्यों और कार्य करने की विधि के चुनाव में सहायक होते है। तथा उसके जीवन में नकारात्मक शक्तियों पर नियन्त्रण करते है।

प्रो0 पी0एस0 नायडू ने भारतीय संस्कृति के निम्नलिखित (6) मूल्य क्रमानुसार उनके महत्व को बताये है3।

1. आर्थिक मूल्य।
2. शारीरिक मूल्य।
3. सामाजिक मूल्य।
4 मनोवैज्ञानिक मूल्य।
5. दार्षनिक मूल्य।
6. आध्यात्मिक मूल्य।

उपरोक्त मूल्यों के आधार पर व्यक्ति विचार शक्ति एवं क्रिया शक्ति के माध्यम से मूल्य का संवर्धन किया जा सकता है। मूल्य के अन्दर व्यक्ति की विचार धारा का प्रकटीकरण स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का महत्व:-

मूल्य वह सिद्धांत है जो किसी संस्कार युक्त समाज की आधारशीला की नीव डालते है। हमारे जीवन को उमंगमय एवं सुखदायी बनाने में मूल्यों का महत्व अतुलनीय है। आज की जीवन शैली में एक ज्वलंत एक चिन्ता का विषय बन गया है। हमारी कार्य शैली दिन प्रतिदिन मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का ह्रास दिखाई पड़ रहा है। समाज में भी नैतिक मूल्य की कमी महसूस की जा सकती है। ‘‘राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा की बात की गयी है मन मतिष्क के पटल एक प्रश्न खड़ा होता है। मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम का निर्माण कौन करें? यदि विषेश प्रयास से पाठ्यक्रम का निर्माण भी हो जाता है। तो उसका क्रियान्वयन कौन करें? परन्तु यह सब कार्य का भार अध्यापकों के कन्धों पर है। किन्तु इसके लिये अध्यापकों में मूल्य युक्त शिक्षा में स्वयं के लिये वाछिंत मूल्यों की स्थापना होनी आवश्यकता है। तभी वे अपने विद्यार्थियों में इन मूल्यों के विकास के प्रति तत्पर हो सकेगें। जब तक उनके नैतिक शिक्षा युक्त मुल्य का कोई स्थान नहीं होगा, मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा की अनुभूति नहीं होगी तब तक वे मूल्यों की संमुचित शिक्षा शिक्षार्थियों को नहीं दे सकेंगे और उन्हें गलत संगति कदाचरण एवं भ्रष्टाचार, लक्ष्य विहीनता आदि बुराइयों से नहीं

बचा सकेगें। आधुनिक भारत की नवीन पीढ़ी को इस प्रकार की शिक्षा की अति आवश्यकता है। हमारे देष भविष्य रूपी पौधाशाला में सामाजिकता नैतिकता सांस्कृतिक आध्यात्मिक एवं आदर्श युक्त नैतिक मूल्य ग्रहण करने के लिये अभिप्रेरित करने का संकल्प अध्यापकों के कर्ण पर है। जिससे नवीन विद्यार्थियों मानवता की कसौटी पर खरे सिंद्ध हो सके निःसन्देह विद्यार्थियों में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित करने के लिये अध्यापकों को प्रशिक्षण देने की आवष्यकता है। यदि हमारे अध्यापकों में इस प्रकार के मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा देने में सषक्त हो सकेगें और अपने शिक्षार्थियों में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का प्रार्दूभाव उत्पन्न कर सकेंगे।

मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा की आवष्यकता:-

आज हमारी भारतीय सांस्कृति में भी परिवर्तन दिख रहा है लोग संकीर्ण विचारधारा के कारण समाज में पर्याप्त द्वन्द दिखाई दे रहा जिसमें लोगों के अन्दर निम्न वाद उत्पन्न हो रहे है जैसे क्षेत्रवाद, भाषावाद, धर्मवाद, जातिवाद आदि कारण मानव में ईष्र्या, द्वैष के व्यक्ति स्वयं व्यक्ति का शत्रु बन रहा हे। और 'वसुदैव कुटुम्बकम' के श्लोगन के भाव का चरित्रार्थ नष्ट हो रहा है। देश में अराजकता और विवादास्प्रद संकट की घड़ी दिख रही है। क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु राष्ट्रीयता के भाव को कुण्डित किया जा रहा है। मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र को किसी भी प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है। प्राचीन काल में महर्षि वशिष्ठ विष्वामित्र, संन्दीपन एवं चाण्डक्य जैसे मूल्यों से युक्त अध्यापकों ने ही श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं सम्राट चन्द्रगुप्त जैसे विद्यार्थियों को परांगत किया अध्यापकों को अपने व्यवहार से जन सामान्य के जीवन में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा सम्प्रेषण हेतु एक प्रेरक का कार्य करता है। इस कारण से अध्यापकों का मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा से परिपूर्ण होना आति आवश्यकता है।

इस सन्दर्भ में सन् 1959 में डा. श्री प्रकाश की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसका केन्द्र बिन्दु धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर था । यह नीति मुख्यता विद्यार्थियों में समुचित आचरण के विकास पर वल दिया। इसके साथ ही अध्यापक द्वारा कार्यक्रम को निर्धारण में परिवार के साथ समन्वय पर विषेश ध्यान दिया गया। शिक्षा संस्थाओं का कार्यक्रम प्रार्थना सभा से प्रारम्भ होता था। धार्मिक एवं सात्विक मूल्य का ज्ञार्नाजन कराया जाता था

पाठ्क्रम में राष्ट्रीयता का भाव और समाज सेवा को स्थान दिया जाता था। विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिंतन, तर्कयुक्त वाद-विवाद तथा आलोचनात्मक व्याख्या के गुणों का विकास किया जाता तथा आयोजन के कार्यक्रम से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाय तथा शिक्षा आयोग (1964-66) की अध्यक्षता डा. डी0एस0 कोठारी की अध्यक्षता में कमीषन का गठन हुआ है। इस आयोग में अनुषंसा यह रही कि छात्रों में शिक्षा द्वारा सामाजिक एवं नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति सत्यनिष्ठा विशिष्ट साहित्य के अध्ययन की भावना का विकास, विभिन्न संस्कृति के मूल्य एवं नैतिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन जैसे गम्भीर अध्ययन विषय पाठ्यक्रम में समाहित किये जाएँ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की गई कि जीवन के लिये आवष्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विष्वास उठता जा रहा है शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिससे सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा सशक्त साधन बन सके।’ ’ मूल्यों का विकास केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि व्यस्कों को भी मूल्य विकसित करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। विद्यालयों एवं परिवार के अतिरिक्त मूल्यों के विकास के सन्द्रर्भ में हमें व्यक्तिगत प्रयास भी करने चाहिये जो हमारे आधुनिक समय की आवश्यकता है। इस प्रकार एक योजना के रूप मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा पर रणनीति बनाकर कार्य करने की आवश्यकता है। ने 1988 में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया जिस प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के नाम से जाना जाता है। मानव संसाधन मत्रालय (1997) में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम को स्वीकृत प्रदान की उक्त पाठ्यक्रम विद्यालयी शिक्षा अंग बनाये जाने पर बल दिया जाने लगा। इस पाठ्यक्रम मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा निम्न प्रकार के मूल्य समाहित थे जैसे क्रियाशीलता ईमानदारी, सत्यता, सहनषीलता, आदि पर तथा शिक्षकों में अन्धविष्वासों से दूर रहने पर बल दिय गया है। इस प्रकार समाज को शक्ति व सहायता एवं संतुलित विकास प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार की उम्मीद की जाती है कि ये क्रियाऐं व्यक्तियों में मूल्यों का विकास में सहायक होगी। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षार्थियों में अच्छे या उत्तम प्रकार मूल्यों को विकसित करने के लिये प्रशिक्षण संस्थाओं में अच्छी शिक्षण अधिगम पारिस्थितियों का विकास किया जायें।

उद्देष्य:-प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देष्य निम्न है-

1. मनुष्य में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का विकास करना।
2. विद्यार्थियों में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का विकास करना।
3. शिक्षकों में वांछित मूल्यों युक्त नैतिक शिक्षा का विकास करना।
4. समाज एवं राष्ट्र के विकास में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का विकास करना।
5. लोकतांत्रिक मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का विकास करना।
6. सभी विद्यालयी स्तर के पाठ्यक्रम में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का विकास करना।
7. भारतीय संस्कृति के पुरातन मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा का संकलन कर नवीन शिक्षा प्रणाली में समाहित करना।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त विमर्ष के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा के संप्रत्यय अर्थ एवं वर्गीकरण बालक एवं विद्यार्थियों द्वारा मूल्यों को समझने में सहायक है। बालक के व्यवहार में मूल्य परिलक्षित है। इस प्रकार की आषा प्रत्येक शिक्षक करता है। परन्तु अध्यापक के व्यवहार में मूल्य परिलक्षित हो, समाज इसकी आषा सभी अध्यापकों से करता है। उपरोक्त विष्लेषण से ज्ञात होता है कि समय पर शिक्षा आयोग, शिक्षा समितियो तथा मनौवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यक्तियों और विभिन्न विद्वानों द्वारा समय पर सुझाव प्रस्तुत किये गये। उनमें व्यक्ति के मूल्य, नैतिक, शिक्षा, समाज, दैनिक व्यवहार, मूल्य शिक्षा का विद्यार्थियों के जीवन में महत्व तथा आवश्यकता लोकतांन्त्रिक मूल्यों का नैतिक शिक्षा में विकास, देश का विकासवादी लक्ष्य, नैतिकता तथा भौतिकता आधुनिकता को जानने की आवष्यकता एवं सामथ्र्य, शुद्ध आचरण तथा भौतिकवादी एवं अध्यात्मवादी संस्कृति में समन्वयवादी दृष्टिकोण जैसे विचारों पर बल दिया गया है। विद्यार्थियों में सकारात्मक पहलू के आधार पर मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा को समाहित कर जीवन में उसका उपयोग करके अपने भविष्य को सफल बनाने में सहायक हो जिससे समाज में एक अभिप्रेरित उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकें।

मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा के सन्दर्भ में भविष्य गामी सुझावः-

वर्तमान समय नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट के मुख्य कारणों में मुख्यतः आधुनिकरण, प्रौद्योगिकीकरण, सामाजिक परिवर्तन पष्चिमीकरण भौतिवादी विचाराधारा, अभिभावकों की कार्य के प्रति उदासीनता व उचित शिक्षा प्रणाली न होना आदि है। साथ ही अध्यापक जिनके कर्णो पर सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि वे मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा को गतिषील बनाये रखे। परन्तु आज का भौतिकवाद ने शिक्षको को भी अछुता नहीं छोड़ा वह भी निजी स्वार्थ में संलग्न रहते है। मूल्य युक्त शिक्षा के लिये परम आवश्यकता है। घर, परिवार, समाज, अध्यापक और राजनीति अपने उत्तरदायित्व का सही ढंग से निर्वहन करें। परन्तु आज फिर से सत्य, अंहिसा, सद्आचरण, प्रेम, शान्ती जैसे शाष्वत परमपरागत मूल्य को पूनः प्रतिष्ठित करने की आवष्यकता है। इस प्रकार के मूल्य व्यक्तिगत एवं समाजिक तथा राष्ट्रीय उत्थान के लिये एवं शान्ती और समन्वय करने लिये परम आवष्यक है। कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नवत है-

1. वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा कोई भी समन्वय नहीं है। यह सार्वजनिक है आज शिक्षा का स्वरूप कुछ संकीर्णता का परिचायक के रूप मं दिख रहा है। जिसमें विद्यार्थियों में रटने या परीक्षा उत्तीर्ण करना मात्र शेष है। विमर्ष एवं तर्क शक्ति का प्रयोग नाम मात्र है।

2. अध्यापक का स्वयं का व्यक्तित्व भी इस प्रकार का होना चाहिये जिससे विद्यार्थियों के लिये अनुकरणीय बन जाये और प्रत्येक शिक्षार्थी का अपने गुरू के प्रति आस्था उत्पन्न हो सके। छात्रओं की चेष्ठा अपने अध्यापक के मूल्यों को ग्रहण करना होता है। और अध्यापक जिन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा को देना चाहता है। उन आदर्षो को अपने अन्दर व्यक्त होना चाहिये। वह परिवार के बाद अपने अध्यापक के समीप अधिक रहता है। और वह अपने गुरू की छवि को अपने अन्दर देखने की आकाँक्षा करता है। वस्तुतः शिक्षक ही विद्यार्थियों के लिये दिषा निर्देषक मित्र और पथ-पदर्षक के रूप में कार्य करता है। शिक्षक की उपयोगिता विद्यार्थी के जीवन में महत्वपूर्ण है। इस बात को सब जानते की विद्यार्थियों का सर्वाधिक विकास शिक्षक पर निर्भर करता है। अध्यापक किसी भी बड़े परिवर्तन लिये इससे अधिक उपयुक्त उपलब्ध वर्ग और कोई नहीं हो सकता है। शैक्षिक क्षमताओं के साथ-साथ शिक्षकों को उत्तरदायित्व में अपने

व्यवसाय तथा गुणवता के प्रति प्रतिवद्धता लगातार बढ़नी चाहिए। इसी कारण से मानवीय मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता सदा ही समाज के सामने के सामने दृष्टिगत रहेगी।

3. भारत सरकार एवं राज्य सरकार के अधीन सभी विद्यालयों में मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा समाजिक आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जावे या सभी संस्थाओं से भी इसका अनुपालन करने की अपेक्षा की जाये।

4. मूल्य आधारित शिक्षा का आधार भूत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय ढाँचेपर आधारित हो तथा प्राथमिक, माध्यमिक तथा विष्वविद्यालय स्तरों पर मूल्य युक्त शिक्षा का उद्देष्यों को बालकों में भारत वर्ष की सभ्यता, संस्कृति, आदर्षो एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का ज्ञान करना चाहिये। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपनी ज्ञान परंपरा को निरंतर गतिषील बनाता है। शिक्षा जीवन और जीवन ही शिक्षा की अवधारणा है। जब मनुष्य का जीवन स्थिर नहीं रह सकता तो शिक्षा कैसे स्थिर रहे सकती है।

5. उत्तम गुणवक्ता के विद्यालय मूल्य युक्त नैतिक शिक्षा के लिये स्थापित किये जाये प्रत्येक प्रांत में इस प्रकार का एक विद्यालय होना चाहिये जो कि प्राथमिक स्तर से पोस्ट ग्रेज्युट स्तर तक मूल्य युक्त नैतिक प्रदान करें।

6. शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिये जिसके अन्तर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेम पूर्वक जीवन यापन करना सीखे। शिक्षा के माध्यम से इस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारना है जो भारतीय संस्कृति के पुरातन मूल्यों का पालन करें। जिससे व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण सम्भव हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. मैनी, डी0 (2005). ‘‘मानव मूल्य परक शब्दावली का विष्वकोष खण्ड (पंचम) प्रकाषक प्रभात कुमार शर्मा द्वारा स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

2. पाण्डेय, आर. (2000). ‘‘मूल्य शिक्षा के परिपेक्ष्य ‘’ आर.लाल बुक डिपों मेरठ, पृ0 152-157

3. पेरी एवं सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2005). ‘‘शिक्षा के सिद्धांत’ ’ आर.लाल. बुक डिपों मेरठ, पृ0-640-645

4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा सारांष (2000). नई दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0 पृ0 2-10

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986). ‘‘मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली पृ0 17-20

6. गुप्ता, डा0 एस0पी0 एण्ड गुप्ता, डा॰0 अल्का (2023). ‘‘भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याये,’’ शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृ0 200-215

7. ओड़, डा0 लक्ष्मीलाल के0 (2012). ‘‘शिक्षा की दार्षनिक पृष्ठ भूमि’ ’ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ0 34-42

8. सिंह, आर0पी0 (1997). ‘‘ए स्टडी आफ वैल्यूज आफ अरबन एण्ड रूरल एडोलसेंट स्टूडंेट, इण्डियन एजूकेषन अब्स्ट्रेक्सअंक-2 जनवरी 1997